• महत्व...

खरमास

हिंदू धर्म में खरमास की अवधि को बहुत विशेष महत्व माना गया है, जो कि साल में दो बार खरमास लगता है। ज्योतिष गणना के अनुसार, जब ग्रहों के राजा सूर्य देव, देवगुरु बृहस्पति की राशि धनु या मीन में प्रवेश करते हैं, तब खरमास लगता है। खरमास 30 दिनों तक यानी एक महीने तक रहता है। खरमास में कोई भी मांगलिक या शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं। आइए जानते हैं इस साल का पहला खरमास मार्च में कब से लगने जा रहा है और इस दौरान शुभ कार्य क्यों नहीं होते हैं।

वैदिक पंचांग के अनुसार, सूर्यदेव 13 मार्च 2025 तक कुंभ राशि में रहेंगे। इसके बाद 13 मार्च को रात 8:54 मिनट पर सूर्य मीन राशि में प्रवेश कर जाएगा। ऐसे में साल का पहला खरमास 14 मार्च 2025 से शुरू होगा और 13 अप्रैल 2025 को समाप्त हो जाएगा।

▶ खरमास में क्यों नहीं होते मांगलिक कार्य

खरमास के दिनों में सूर्यदेव धनु और मीन राशि में प्रवेश करते हैं, जिसके इसके चलते बृहस्पति ग्रह का प्रभाव कम हो जाता है। वहीं, बृहस्पति ग्रह को शुभ कार्यों का कारक माना गया है। शादी के

कारक गुरु यानी बृहस्पति माने जाते हैं। गुरु के कमजोर होने से शादी में देर होती है। साथ ही, रोजगार और बिजनेस में भी रुकावट आती है। इसलिए खरमास के दिनों में कोई शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं।

▶ खरमास में वर्जित कार्य

हिंदू धर्म में खरमास को मांगलिक या शुभ कार्यों के लिए अशुभ माना गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि खरमास के दौरान सूर्य के धनु राशि में होने से स्थितियां बिगड़ जाती हैं। ऐसे में अगर इस दौरान कोई शुभ या मांगलिक कार्य किया जाता है, तो वह कार्य सफल नहीं होता है।

▶ अगर आप कोई नया कारोबार शुरू करने के बारे में सोच रहे हैं, तो भूलकर भी खरमास में इसकी शुरुआत न करें, क्योंकि इससे आपके कारोबार में नुकसान हो सकता है। इसलिए खरमास में शुभ व मांगलिक कार्य करने की मनाही होती है। खरमास में शादी-विवाह, मुंडन, गृह प्रवेश, सगाई, जनेऊ संस्कार, रोका, नए बिजनेस की शुरुआत, नामकरण आदि कार्य पूर्णरूप से वर्जित होते हैं।

• होली पर...

चंद्रग्रहण से पहले करें ये काम

होली के दिन चंद्र ग्रहण लगने जा रहा है जिसका धार्मिक और ज्योतिषीय महत्व है। इस दिन चंद्र ग्रहण का प्रभाव सभी राशियों पर पड़ेगा, लेकिन कुछ विशेष उपाय करके इसके नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र में चंद्र ग्रहण को अशुभ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि चंद्र ग्रहण के दौरान नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ जाता है और चंद्र ग्रहण के दौरान भगवान शिव की पूजा करना बहुत ही शुभ माना जाता है।

पंचांग के अनुसार, साल 2025 का पहला चंद्र ग्रहण 14 मार्च दिन शुक्रवार को लगेगा। भारतीय समयानुसार, चंद्र ग्रहण 14 मार्च को सुबह 9 बजकर 27 मिनट से दोपहर 3 बजकर 30 मिनट तक रहेगा। इस चंद्र ग्रहण की अवधि 6 घंटे 3 मिनट की होगी। यह चंद्र ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा, इसलिए भारत में इसका सूतक काल मान्य नहीं होगा. यह ग्रहण ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, अधिकांश अफ्रीका, अटलांटिक आर्कटिक महासागर, पूर्वी एशिया आदि में देखा जा सकेगा।

चंद्र ग्रहण से पहले कर लें ये काम

▶▶ चंद्र ग्रहण के दौरान भगवान शिव की पूजा करना बहुत ही शुभ माना जाता है। भगवान शिव को चंद्रमा का स्वामी माना जाता है, इसलिए उनकी पूजा करने से चंद्र ग्रहण के नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है।

▶▶ चंद्र ग्रहण के दौरान चंद्र मंत्र का जाप करना भी बहुत ही लाभदायक होता है। आप 'ऊं सोम सोमाय नम:' मंत्र का जाप कर सकते हैं।

▶▶ चंद्र ग्रहण के दौरान दान करना बहुत ही शुभ माना जाता है। आप गरीबों और जरूरतमंदों को सफेद वस्त्र, चावल, दूध या चांदी का दान कर सकते हैं।

▶▶ चंद्र ग्रहण से पहले तुलसी के पत्ते तोड़कर रख लें और ग्रहण के समय उन्हें भोजन और पानी में डालकर प्रयोग करें।

▶▶ ग्रहण समाप्त होने के बाद स्नान अवश्य करें और घर की साफ सफाई करें तो ग्रहों पर पड़ने वाले प्रभाव को कम किया जा सकता है।

इन राशि वालों के बन जाएंगे बिगड़े काम

▶▶ वृषभ राशि के जातकों को चंद्र ग्रहण के दौरान भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए और चंद्र मंत्र का जाप करना चाहिए। इससे उनके बिगड़े हुए काम जल्दी बनने लगेंगे और जीवन में हर कार्य में सफलता प्राप्त होगी।

▶▶ कर्क राशि के जातकों को चंद्र ग्रहण के दौरान दान करना चाहिए और तुलसी के पत्तों का प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से लोगों पर ग्रहण का प्रभाव कम होता है।

▶▶ वृश्चिक राशि के जातकों को चंद्र ग्रहण के दौरान हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए और गरीबों को भोजन कराना चाहिए। इससे लोगों के संकट जल्द ही दूर होने लगेंगे।

▶▶ मीन राशि के जातकों को चंद्र ग्रहण के दौरान भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए और पीले वस्त्रों का दान करना चाहिए। ऐसा करने से भगवान विष्णु की कृपा से लोगों के जीवन में कभी परेशानियां नहीं आएंगी और हर कष्ट दूर होगा।

रंगों का त्योहार होली...

होली का त्योहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका दहन किया जाता है और उसके अगले दिन लोग रंग और गुलाल से एक-दूसरे के साथ होली खेलते हैं। होलिका दहन इस साल 13 मार्च की रात को होगा और अगले दिन 14 मार्च को होली खेली जाएगी।

होलिका दहन का शुभ समय 13 मार्च की रात 11:26 बजे से 12:30 बजे तक रहेगा, क्योंकि इस दौरान भद्रा समाप्त हो जाएगी। परंपरा के अनुसार, होली का पर्व पूर्णिमा के दिन होलिका दहन के बाद प्रतिपदा को मनाया जाता है।

हालांकि, इस साल 14 मार्च को भद्रा और चंद्र ग्रहण पड़ रहा है, जिससे शुभ कार्यों पर प्रतिबंध रहेगा। इसी कारण कई ज्योतिषाचार्यों ने 15 मार्च को होली मनाने की सलाह दी है...

होलिका दहन का शुभ समय 13 मार्च की रात 11:26 बजे से 12:30 बजे तक रहेगा, क्योंकि इस दौरान भद्रा समाप्त हो जाएगी। परंपरा के अनुसार, होली का पर्व पूर्णिमा के दिन होलिका दहन के बाद प्रतिपदा को मनाया जाता है। हालांकि, इस साल 14 मार्च को भद्रा और चंद्र ग्रहण पड़ रहा है, जिससे शुभ कार्यों पर प्रतिबंध रहेगा। इसी कारण कई ज्योतिषाचार्यों ने 15 मार्च को होली मनाने की सलाह दी है।

पंचांग के अनुसार, इस साल होलिका दहन के दिन पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के साथ धृति योग बन रहा है, जबकि होली के दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के साथ शूल योग रहेगा। इस योग को कुछ स्थानों पर शुभ और कुछ स्थानों पर अशुभ माना जाता है।

कुछ विशेष उपाय

होली का पर्व खुशियों, रंगों और उत्साह का प्रतीक होता है, और इस दिन किए गए कुछ विशेष उपाय जीवन में सुख, समृद्धि और सकारात्मकता लाने में सहायक हो सकते हैं। तुलसी, जो हमारे घरों में पवित्रता और दिव्यता का प्रतीक मानी जाती है, उसके सूखे पत्तों से किए गए उपाय खासतौर पर होली के दिन अत्यधिक प्रभावी होते हैं। आइए जानते हैं, होली के दिन सूखी तुलसी से जुड़ी कुछ खास उपायों के बारे में।

● **लाल कपड़े में बांधकर रखने से लाभ :** सूखी तुलसी की पत्तियों को लाल कपड़े में बांधकर घर के धन के स्थान (जैसे तिजोरी, बक्से या जहां पैसे रखे जाते हैं) में रखने से मां लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है। माना जाता है कि तुलसी की पत्तियां धन की वृद्धि, समृद्धि और सुख-शांति का प्रतीक होती हैं।

● **सकारात्मक ऊर्जा का संचार :** सूखी तुलसी के पत्तों की महक घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है और घर के वातावरण को शुभ बनाती है। यह उपाय गरीबी को दूर करने और घर में सुख-समृद्धि लाने में सहायक माना जाता है।

● अगर आपके घर में लड्डू गोपाल की स्थापना की गई है, तो होली के दिन तुलसी की सूखी पत्तियां डालकर उनकी प्रतिमा को स्नान कराना बहुत शुभ होता है। यह उपाय आपको विशेष फल प्रदान करता है और आपके घर में स्थायी सुख और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

● **विष्णु पूजा में तुलसी का महत्व :** भगवान विष्णु को तुलसी की पत्तियां बहुत प्रिय होती हैं। होली के दिन यदि आप भगवान विष्णु को भोग अर्पित करते हैं, तो मिष्ठान में तुलसी की पत्तियां डालकर उन्हें अर्पित करें। यह उपाय आपके जीवन में धन, सुख और समृद्धि को बढ़ावा देता है।

● होली के दिन श्री कृष्ण के भोग में तुलसी की पत्तियों का इस्तेमाल करें। यह 15 दिनों तक भगवान श्री कृष्ण के भोग में डालने के लिए उपयोगी होती है। इस उपाय से घर में सुख-शांति और समृद्धि बनी रहती है।

■ पं. नित्यानंद

• प्रकृति...

फगुआ गीत

फाल्गुन महीने में प्रकृति में नए रंग खिलते हैं, और हर तरफ उत्साह और उमंग का माहौल होता है। फगुआ गीत प्रकृति के इस उत्सव को मनाने का एक तरीका है। होली का त्योहार प्रेम और सौहार्द का प्रतीक है। फगुआ गीत इन भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम हैं। इन गीतों में राधा-कृष्ण के प्रेम, हंसी-मजाक और सामाजिक संदेशों का वर्णन होता है। इस साल होली का त्योहार 14 मार्च को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाएगा।

फगुआ गीत हमारी सांस्कृतिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं और हमारी संस्कृति को जीवंत रखते हैं। फगुआ गीत सामूहिक रूप से गाए जाते हैं, जिससे लोगों में एकता और भाईचारे की भावना बढ़ती है। ये गीत होली के त्योहार को और भी रंगीन और मजेदार बनाते हैं। फगुआ गीत मनोरंजन का एक लोकप्रिय माध्यम हैं। इन गीतों में हंसी-मजाक, चुटकुले और सामाजिक व्यंग्य होते हैं, जो लोगों को हंसाते और गुदगुदाते हैं। इस प्रकार, फगुआ गीत होली के त्योहार का एक अभिन्न अंग हैं और हमारी संस्कृति और परंपरा को दर्शाते हैं।

• बांस का पौधा लगाना...

वास्तु शास्त्र के अनुसार बांस का पौधा नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने में बहुत प्रभावी होता है। इसलिए होली से पहले अपने घर में बांस का पौधा लगाएं। यह पौधा न केवल सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है, बल्कि परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति में भी सुधार लाने में सहायक माना जाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित